आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 10-10-14

हर रोज नई-नई युक्तियां देकर हम आत्माओं को याद की यात्रा सिखलाकर, हम आत्माओं को पाप-आत्मा से पुण्य आत्मा बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिव ने कहा, मीठे बच्चे - तुम जितना-जितना बाप को प्यार से याद करेंगे उतना आशीर्वाद मिलेगी, पाप कटते जायेंगे.

भक्ति-मार्ग में कई जन्मो से हम कितने भटकते थे, जहॉ कुछ थोड़ा सा सुना कि इस गुरु कि या बाबा का आशीर्वाद मिल जाये तो हमारा जीवन कृतार्थ हो जाये. हमें जीवन में सुख-शांति मिल जायें. उससे हमें सदा के लिए सुख-शांति तो मिली नहीं लेकिन हमारे में दर-दर भटक कर गुरुओं के सामने जाकर आशीर्वाद की भीख मांगने के संस्कार जरूर बन गये.

अब परमात्मा स्वयं आकर हमें ज्ञान देकर समझा रहे है कि सच्चा आशीर्वाद किसको कहा जाता है? सच्चा आशीर्वाद कहा जाता है जहॉ आत्मा को सदा के लिए सुख-शान्ति मिले, आत्मा शक्ति से भरपूर हो कर अपनी कर्मेन्दियों पर राज्य चलाये. इसके लिए आत्मा को परमात्मा से योग कर अपने में बल भरना होता हैं. बाप कहते है, आशीर्वाद कोई मांगने की चीज नहीं है. यह तो आत्मा को स्वयं पुरुषार्थ कर, एक बाप की याद में रहकर अपने पर ही रहम करने की बात हैं. जितनी आत्मा, परमात्मा-बाप को जास्ती याद करेगी उतना जास्ती बाप से आशीर्वाद पायेगी या कहे ज्यादा बलवान बनेगी. फिर अभी के पुरुषार्थ के आधार से ही उस आत्मा सतयुग में भी ऊंच पद को प्राप्त करती हैं.

बाबा ने आज सारी मुरली में याद की यात्रा के लिए जो भी पॉइन्टस कहे है उसे हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर एक बार पढ़ेंगे तो हमें अपनी स्थिति देही-अभिमानी बनाने की प्रैक्टिस होगी और देही-अभिमानी स्थिति में बाबा को याद करने से हमारी आत्मा भी पावन बनती जायेगी.

- बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं जब ॐ शान्ति कहा जाता है तो गोया अपनी आत्मा को स्वधर्म का परिचय दिया जाता है (इसका मतलब हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर शान्ति में ऐटेन्शन से बैठना होता है). तो आत्मा को जरूर बाप भी ऑटोमेटिकली याद आता है क्योंकि याद तो हरेक मनुष्य भगवान को ही करते हैं.

- बाप समझाते है, सतयुग में आत्मा बलवान है, तो पवित्र-निर्विकारी रहती हैं. फिर आत्मा में जन्म-बाय-जन्म बल कम होने से आत्मा पवित्र-निर्विकारी से अपवित्र-विकारी बनती हैं. अभी आत्मा को पुरुषार्थ कर बाप की याद से फिर से बलवान बनाना हैं. बाप है सर्वशक्तिमान. उनकी याद से ही आत्मा बलवान बनती हैं.

- बाप कहते हैं मुझे और वर्से को याद करो. हद के सब सम्बन्ध को छोड़ अब बेहद के सम्बन्ध को ही याद करना है.

- बाप को याद करने से ही आत्मा में देवी-गुण धारण करने की शक्ति आती है, जिसे ही आत्मा के देवी संस्कार बनते है.

- बाप (परमात्मा) तो है ही विदेही, विचित्र. तो बच्चे (आत्माये) भी विचित्र हैं. यह समझ ने की बात है. हम आत्मा विचित्र हैं फिर यहॉ चित्र (शरीर) में आते हैं. अभी बाप फिर कहते हैं विचित्र बनो, अपने स्वधर्म में टीकों और विचित्र बाप को याद करो.

- बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान, प्योर बनेंगे.

- शिवबाबा तो न मनुष्य है, न देवता है. उनको सुप्रीम आत्मा कहा जाता हैं. वह तो पतित वा पावन नहीं होता, वह तो है ही एवर-प्योर. वह समझाते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे. तुम सतोप्रधान बन जायेंगे.

- साकारी देवताओं के लिए कहा जाता है, ब्रह्मा देवताए नम: विष्णु देवताए नम:. फिर परमात्मा के लिए कहते हैं शिव परमात्माए नम:. तो परमात्मा सबसे बड़ा ठहरा ना. उनको ही पतित-पावन कहा जाता हैं. अब हम आत्माओं को पावन बनाना उस परमात्मा का ही काम है.

- बाप तुम्हें श्रीमत् देते है, मीठे बच्चे - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. ऐसे हर रोज बाबा के महावाक्यों को हम आत्मा समझ बाप की याद में रहकर पढ़ेंगे तो हमें आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस भी होगी और हमारी आत्मा भी पावन बन जायेंगी.

ॐ शांति.